

विश्व शांति का उक नारा । यज्ञ से होगा जग उजियारा ॥



यदि क्षितायुर्यदि वा परेतौ यदि  
मृत्योरनितकं नीत उव ।

तमा हरामि निर्गतैऽपस्थादस्पाश्मिनं

शतशारदाय ॥ (अर्थव. 3.11.2)

यदि व्यक्ति की आयु क्षीण हो चुकी हो,  
वह जीवन से निराश हो चुका हो,  
मृत्यु के बिलकुल समीप पहुँच चुका हो,  
तो भी यज्ञाचिकित्सा उसे मृत्यु  
के मुख से लौटा लाती है अर्थात्  
उसे पुनः नव जीवन देती है।

इदं हवियातुधानान् नदी फैनमिवावहत् ॥ -अर्थव. 1.8.2

यज्ञ मे होमी शर्व हवि रोग उवं प्रदूषणस्थपी यातुधनों को वैसे ही वि नष्ट कर देती है जैसे नदी, झागों को ।